Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ अहोई अष्टमी व्रत पारण विधि ॥

॥ जय अहोई माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ पारण कब और कैसे करें ॥

पारण का अर्थ है पूजा और निर्धारित धार्मिक क्रम के बाद व्रत का समापन करके जल तथा भोजन ग्रहण करना। अहोई अष्टमी में पारण का समय परिवार की परंपरा से जुड़ा होता है। व्रत आरंभ करने से पहले अपने घर का विधान जान लें।

तारों को अर्घ्य देने की परंपरा

अनेक परिवारों में संध्या पूजन और कथा के बाद आकाश में तारे दिखाई देने पर उन्हें जल का अर्घ्य दिया जाता है। इसके बाद माता अहोई को प्रणाम करके व्रत खोला जाता है। इस परंपरा में केवल चंद्रमा की प्रतीक्षा करना आवश्यक नहीं माना जाता।

चंद्र दर्शन वाली परंपरा

कुछ परिवारों में चंद्र दर्शन और चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद पारण होता है। अहोई अष्टमी को चंद्रमा देर रात निकल सकता है। यह समय तारे दिखाई देने के समय से अलग है। अपनी पारिवारिक रीति और स्वास्थ्य की परिस्थिति के अनुसार पहले ही तैयारी करें।

अर्घ्य से पहले तैयारी

अहोई माता का पूजन, कथा और आरती पूरी कर लें। स्वच्छ जल का लोटा या करवा, प्रसाद और पीने का पानी पास रखें। खुले और सुरक्षित स्थान से दर्शन करें। अर्घ्य देते समय बच्चों सहित पूरे परिवार के मंगल की प्रार्थना करें।

अहोई का पारण सामान्यतः उसी व्रत-दिवस की संध्या या रात्रि में होता है। इसे एकादशी की तरह अगले दिन के पारण-विधान से न मिलाएँ।

॥ अर्घ्य के बाद व्रत का समापन ॥

१. जल और प्रसाद ग्रहण करें

अपनी परंपरा के अनुसार तारों या चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद अहोई माता को प्रणाम करें। पीने का स्वच्छ जल अलग पात्र में रखें। जल और प्रसाद से व्रत खोलें, फिर अपनी सुविधा के अनुसार भोजन करें। किसी निश्चित व्यक्ति के हाथ से जल लेना सभी परिवारों का अनिवार्य नियम नहीं है।

२. परिवार के साथ प्रसाद बाँटें

बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को प्रसाद दें। बड़ों का आशीर्वाद लें और सबके सुख की कामना करें। भोग, भोजन और बायने की वस्तुएँ अपनी पारिवारिक परंपरा व सामर्थ्य के अनुसार रखें। बच्चों को पूरा दिन उपवास करने के लिए बाध्य न करें।

३. बादल या दर्शन न होने पर

मौसम या स्थान के कारण तारे अथवा चंद्रमा न दिखें तो अपनी परंपरा के जानकार पंडित या परिवार के बड़े से मार्गदर्शन लें। किसी दूसरे शहर की तस्वीर या समय को अपने स्थान का दर्शन न मानें। सभी परिवारों पर एक ही वैकल्पिक नियम लागू नहीं होता।

४. स्वास्थ्य और आवश्यक देखभाल

अस्वस्थ होने पर उपवास जारी रखने की जिद न करें। नियमित दवाएँ स्वयं बंद न करें और आवश्यकता होने पर चिकित्सकीय सहायता लें। स्वास्थ्य के कारण व्रत खोलना पड़े तो स्वयं को दोष न दें। माता की आराधना और संतान के मंगल की प्रार्थना श्रद्धापूर्वक जारी रखी जा सकती है।

॥ जय अहोई माता ॥